पालि अध्ययन ग्रन्थ माला-2

सुत्तपिटके खुद्दकनिकाये

जातकपालि

(पठमो भागो)

JĀTAKA PĀLI

(Vol. I)

(संस्कृतच्छाया-रोमनलिप्यन्तरण-हिद्याङ्ग्लभाषानुवादसहिता)

(With Sanskritchāyā-Romantranslitration & Hindi-English Translation)

अजय कुमार सिंह

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

(भारतशासन-मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनः,
राष्ट्रियमूल्याङ्कन-प्रत्यायनपरिषदा 'ए'-श्रेण्या प्रत्यायितः मानितविश्वविद्यालयः)

नवदेहली

पालि अध्ययन ग्रन्थमाला-2

सुत्तपिटके खुद्दकनिकाये

जातकपालि

(पठमो भागो)

JĀTAKA PĀLI

(Vol. I)

(संस्कृतच्छाया-रोमनलिप्यन्तरण-हिन्द्यांग्लभाषानुवादसहिता)

(With Sanskritchāyā-Romantranslitration & Hindi-English Translation)

संकल्पना मार्गदर्शनं च

प्रो. राधावल्लभत्रिपाठी

कुलपतिः, रा.सं.संस्थानम्, नवदेहली

संपादकः संस्कृतच्छायाकारश्च

अजयकुमारसिंहः

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

मानितविश्वविद्यालयः

(भारतशासन-मानवसंसाधनविकास-मन्त्रालयाधीनम्)

नवदेहली

प्रस्तावना

मंगलमूर्तिः सततं वितरतु भद्रं परम्पराऽस्माकम्।
पालि-प्राकृत-संस्कृत-भाषासंगमसरस्वतीव।।
मैत्री-मुदिता-करुणोपेक्षाः श्लिष्टाः विभान्तु नित्यं ताः।
चतुष्टयीयं पाली घटयतु सुसंस्कृतं विश्वम्।।

त्रिपिटक में पालि-भाषा में भगवान् बुद्ध के 2550 वर्ष पहले दिए गए उपदेश सर्वाधिक प्रामाणिक रूप से संरक्षित हैं। पालि वही मागधी भाषा है, जिसे बुद्ध-वचनों की संवाहिका होने के कारण थाईलैंड, श्रीलंका, वर्मा, कम्बोडिया आदि दक्षिण एशियाई देशों में पवित्र भाषा का दर्जा दिया जाता है, पालि भाषा का संरक्षण-संवर्धन भी इन एशियाई देशों में विशेष रूप से हुआ। कई शताब्दियों तक हम इस ज्ञान से अपरिचित रहे। यूरोप के विद्वानों ने जब पालि टेक्स्ट सोसायटी के माध्यम से इसे उजागर किया तब भारत ने पुनः अपनी पुरानी धरोहर को संरक्षित करने का उपक्रम किया, इस क्रम में हमने पालि के मूल ग्रन्थों तथा उनके अनुवादों के प्रकाशन का निश्चय किया है। भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय की योजना के तहत हमने पालि एवं प्राकृत में विकास की योजना निरन्तर गतिशील रखा है। इसी क्रम में लखनऊ एवं दिल्ली में पालि अध्ययन केन्द्र की स्थापना की जा चुकी है। जिसकी फलश्रुति ये ग्रन्थ हैं। पूर्व में इस योजना में पाँच ग्रंथों का प्रकाशन भी किया जा चुका है। प्राकृत की संस्कृतच्छाया की परम्परा तो सैकड़ों वर्षों से रही है। पालि के मात्र धम्मपद एवं मिलिन्दप्रश्न के कुछ अंशों की छाया मिलती है। संस्कृतच्छायायुक्त इस संस्करण से भारतीय प्रबुद्ध वर्ग के विचार का यह क्षेत्र बन सकेगा।

संस्कृत साहित्य की भांति पालि वाङ्मय की दूसरी संज्ञा बुद्ध साहित्य भी है। भगवान् बुद्ध के द्वारा दिये गये सभी उपदेशों को संकलन पालि में है। पालि साहित्य गद्य और पद्य दोनों में निबद्ध है। पालि सूत्रों में अनेक बार

भूमिका

पालि सुत्तों में हम अनेक बार भगवान् को बुद्ध होने से पूर्व के अपने जीवन का इस प्रकार निर्देश करते हुए देखते हैं- "सम्बोधि प्राप्त होने से पहले बुद्ध न होने के समय, जब मैं बोधिसत्त्व ही था" आदि। अतः बोधिसत्त्व से तात्पर्य ज्ञान, सत्य, दया आदि मानवीय गुणों का अभ्यास करने वाले उस साधक से है, जिसका आगे चलकर बुद्ध होना निश्चित है। भगवान् बुद्ध भी न केवल अपने अन्तिम में बुद्धत्व-प्राप्ति की अवस्था से पूर्व बोधिसत्त्व रहे थे, बल्कि अपने पूर्व जन्मों में भी बोधिसत्त्व की चर्या का उन्होंने पालन किया था। 'जातक' की कथाएँ भगवान् बुद्ध के इन विभिन्न पूर्वजन्मों से, जबकि वे 'बोधिसत्त्व' रहे थे, सम्बन्धित हैं। अधिकतर कहानियों में वे प्रधान पात्र के रूप में चित्रित हैं। कहानी के वे स्वयं नायक हैं। कहीं-कहीं उनका स्थान एक साधारण पात्र के रूप में गौण है और कहीं-कहीं वे एक दर्शक के रूप में भी चित्रित किये गये हैं।

जातक कथाओं की विनिश्चित संख्या का निर्विवाद प्रमाण नहीं है। उपलब्ध जातक कथा-संकलन में मात्र पाँच सौ सैंतालीस (547) कथाएं हैं अर्थात् बोधिसत्त्व के पाँच सौ सैंतालीस योनियां वर्णित हैं। लंका आदि में पारम्परिक क्रमानुसार जातक संख्या पाँच सौ पचास (550) है। इसकी पुष्टि 'समन्तपासादिका अट्ठसालिनी और सुमंगल विलासिनी (अट्ठकथाओं) से भी होती है 'पण्णा अधिक पञ्चजातक सतानि जातकंति वेदिब्बं'। इस कथन और वर्तमान स्वरूप में मात्र तीन का अन्तर है। कतिपय कथाओं में मात्र पात्र-नय परिवर्तन-संग कथानक समान हैं। कहीं दो कथाओं का कथानक एक में संयोजित कर दिया गया है। इससे संकेत मिलता है -निश्चयतः जातक-संख्या पाँच सौ पचास रही होगी।

अस्तु, प्रत्येक जातक का कथानक पञ्चतत्त्वों से संगठित है। पाँच तत्त्वों को हम कथानक के पाँच अंग-भाग भी अभिसंज्ञित कर सकते हैं-१.

Appakenapi medhāvī, pābhatena vicakkhaṇo;
samuṭṭhāpeti attānaṃ, aṇuṃ aggiṃva sandhaman ti.

संस्कृतच्छाया -

अल्पकेनापि मेधावी प्रभूतेन विचक्षणः ।
समुत्थापयतित्यात्मानम् अणुमग्निमिव संधमन् इति ॥

हिन्दी अनुवाद -

मेधावी पुरुष थोड़ी-सी भी आग को फूँककर, बढ़ा लेने के समान, थोड़े से भी मूलधन से अपने को उन्नत कर लेता है।

English Translation -

With humblest start and trifling capital A shrewd and able man will rise to wealth, E'en as his breath can nurse a tiny flame.

5. तण्डुलनाळिजातकं

किमग्घति तण्डुलनाळिकायं, अस्सान मूलाय वदेहि राज।
वाराणसि सन्तरबाहिरतो, अयमग्घति तण्डुलनाळिका ति ॥

Kimagghati taṇḍulanāḷikāya, assāna mūlāya vadehi rāja.
bārāṇasiṃ santarabāhirato, ayamagghati taṇḍulanāḷikā ti.

संस्कृतच्छाया-

किम् अर्हति तण्डुलनालिकेयम्, अश्वानां मूल्याय वद राजन्।
वाराणस्याः सान्तर्बाह्यरताम्। इयमर्हति तण्डुलनालिकाकेति।

हिन्दी अनुवाद -

राजन ! घोड़ो के मूल्य स्वरूप इस तण्डुलनालिका का क्या मूल्य है? इस तण्डुलनालिका का मूल्य अन्दर बाहर (सम्पूर्ण) (वाराणसी) के बराबर हो सकता है।

English Translation -

Dost ask hour much a peck of rice is worth Why , all Benares, both within and out. Yet Strange to tell, five hundred horses too Are worth precisely this same peck of rice!

6. देवधम्मजातकं

हिरिओत्तप्पसम्पन्ना, सुक्कधम्मसमाहिता।
सन्तो सप्पुरिसा लोके, देवधम्मा ति वुच्चरे ति॥